# वाद संवाद

आई. एस. एस. एन.
2348 – 8662

शोध विषयक अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक
PEER-REVIEWED JOURNAL

## स्त्री वार्षिक विशेषांक

अंक-21-24
जनवरी-दिसम्बर, 2019

स्वाक्षर
नई दिल्ली ( भारत )

22. पितृसत्तात्मक समाज के हिंसात्मक औज़ार : लोहे की कमरपेटियाँ
– डॉ. श्रीमती विजय 120

23. यशपाल की कहानियों में नारी
– डॉ. एन. सेल्वराज 124

24. समकालीन हिन्दी दलित कहानियों में दलित नारी
– महेश्वरी.ए 136

25. हिन्दी कथा साहित्य में नारी चित्रण
– डॉ. एकता वशिष्ठ 139

26. समकालीन कहानी में जूझती नारी का चित्रण
– डॉ. शेख अब्दुल वहाब 146

27. मृदुला गर्ग की कहानियों में नारी विमर्श
– डॉ. डी. उमादेवी 149

28. वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में नारी विमर्श और आधुनिक परिवेश में
– एस. राजलक्ष्मी 153

29. भीष्म साहनी के साहित्य में नारी
– डॉ. एन. सेंदिल कुमरन 159

30. भारतीय समाज में नारीवाद : वैदिककालीन एवं आन्यान्विक दृष्टिकोण
– श्रीमती मैना 167

31. समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श
– डॉ. अजयपाल सिंह 171

32. औद्योगिक महिला श्रमिकों की दशा और दिशा
– डॉ. मुन्नी चौधरी 176

33. नारी शिक्षा के आयाम
– डॉ. पुष्पेन्द्र सिंह चौहान 194

34. वर्तमान समाज की नारी एक वास्तविक परिदृश्य
– डॉ. अखिलेश विक्रम 197

35. गुरु नानकदेव क मानस में नारी चिंतन
– डॉ. प्रिया शर्मा 19

36. राजी सेठ की कहानियों में नारी
– जे. भुवनेश्वरी 205

37. सांस्कृतिक वर्चस्व और आदिवासी स्त्री
– संजीव कुमार झा 208

38. राज्य महिला नीति : कामकाजी महिलाओं को लाभ
– डॉ. सुमित्रा 21

39. महिला उत्थान और संयुक्त राष्ट्र संघ
– डॉ. इन्द्रमोहन झा 22

40. नारी और नारी
– डॉ. पवन सचदेवा 22

41. भूमण्डलीकरण और स्त्री छवि
– डॉ. कुसुम लता 22

42. महिलाओं के विकास में आधुनिक तकनीकि तथा संसाधनों का प्रभाव
– आराधना 23

43. भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में नारी विमर्श
– डॉ. संतोष सेन 23

44. नारी अस्मिता: सवालों के घेरे में
– डॉ. प्रतिभा कुमारी जैमिनी 24

45. इतिहास में महिला के अधिकार
– रचना 24

46. साम्प्रदायिकतापरक उपन्यासों में 'जाति और लैंगिकता' के प्रश्न
– डॉ. गीता देवी 24

त्रैमासिक पत्रिका संयुक्तांक:21-24 वर्ष 2019 : आईएसएसएनः 2348-8662

स्त्री वार्षिक विशेषांक 2019

जनवरी-दिसम्बर

# वाद संवाद

साहित्य, समाज और संस्कृति की पत्रिका

## स्त्री केन्द्रित वार्षिक विशेषांक

प्रधान संपादक
डॉ. राम रतन प्रसाद

Peer-Reviewed International Hindi Journal

ISSN : 2348 – 8662



# गुरु नानकदेव क मानस में नारी चिंतन

–डॉ. प्रिया शर्मा

भारतीय नारी सदियों से पुरुष प्रधान समाज द्वारा शोषित रही है। वह मात्र पुरुष की वासना की तृप्ति तथा संतानोत्पत्ति का साधन–मात्र बनकर रह गई थी। गुरु नानक ने नारी की इस दयनीय स्थिति से दयार्द्र होकर अपनी वाणी में उसके शोषण संबंधी मर्मस्पर्शी चित्र अंकित किए तथा उसको उसके अधिकारों से वंचित करके अपना दास बनाने वाली समाज–व्यवस्था, धर्म, सम्प्रदाय, तथाकथित जननेताओं, धार्मिक मुल्ला आदि सभी की तीव्र भर्त्सना करके उसकी मुक्ति का स्वर उठाया। परंपरित सामंतवादी व्यवस्था जहाँ नारी पर क्रूर नैतिक नियंत्रण लगाने की पक्षधर थी, वहाँ गुरुनानक उसे अधिकारिक स्वतंत्रता देने की बात करते हैं। नारी के प्रति उनका दृष्टिकोण 'सो क्यों मंदा आखीए जिट जम्मे राजाना', नानकवाणी के माध्यय से समाज को आचरण संबंधी लोकव्यापी दृष्टि प्रदान करता है। धर्म का पालन आचरण के द्वारा ही किया जा सकता है। आचार–शास्त्र ही मनुष्य को जीवन–यामन की उत्तम पद्धति सिखाता है जिसका विशेष महत्व है।

जीवन के लक्ष्य की सिद्ध की कामना आस्तिकता को दृढ़ करती है और वह लक्ष्य है, आत्मा का परमात्मा से मिलन। ऐसे आस्तिक के लिए जिसकी साधना रहस्यमयी है, वह मिलन या ऐक्य मानव–चेतना की सर्वोच्च प्राप्ति है। युवा एवं वृद्ध, धनी एवं निर्धन–सभी इसी ओर प्रेरित हैं। नानकवाणी में जीवात्मा का परमात्मा के प्रति समग्र समर्पण भावपूर्ण समग्रता, व्यग्रता और कट्रता के साथ उपस्थित हुआ है। साजन (ईश्वर) अपनी प्यारी प्रियतमा से मिलने को इच्छुक है, किन्तु देखना यह है कि मिलाप कैसे होगा–

***'साजन चले पिआरिआ किड मेला होई'***[2]

इस प्रश्न का उत्तर निम्नलिखित पंक्ति में इसप्रकार है–**'जे गुण होवहिं गंठडीए मेलेगा सोई।'**[3]

मनुष्य का ज्ञान अभी अधूरा है। जिस वस्तु को यत्र–तत्र खोज रहा है, वह तो उसके भीतर हैं। नानक जीवन रूप स्त्री से कहते हैं कि पति घर में है, फिर उसे विदेश में समझकर दुखो क्यों हो रही हो? यदि पति से मिलाप करना है तो उसे अपना हृदय निर्मल रखना पड़ेगा–

***घर ही मुंधि बिदेसि पिरू नित झूरे सम्हाले***
***मिलदिआ ढिल न होवई जे नीअति रासि करे।***[4]

प्रियतम प्रभु की प्राप्ति के लिए जीवात्मा रूपी स्त्री को गहन प्रेम करना पड़ता है, तभी दयालु प्रभु अपनी प्रीति प्रदान करते हैं। प्रियतम से मिलन होने पर सेज सुहावनी लगती है तथा सातों सरोवर, (पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, मन तथा बुद्धि) अमृत से भर जाते हैं–

• सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, दयालसिंह सांध्य कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली